सत्य साहित्य

वर्ष 54 / अंक 4
अप्रैल
2016

सत्य साहित्य, श्री रामशरणम् इन्टरनेशनल सेन्टर, नई दिल्ली की एक त्रैमासिक पत्रिका

No. 299

मेरा (राम) आपकी कृपा से सब काम हो रहा है
करते हो तुम कन्हैया मेरा नाम हो रहा है।

(1) पतवार के बिना ही मेरी नाव चल रही है।
हैरान है जमाना मंजिल भी मिल रही है।
करता नहीं मैं कुछ भी सब काम हो रहा है। करते...

(2) तुम साथ जब हो मेरे किस चीज की कमी है।
किसी और चीज की अब दरकार भी नहीं है।
तेरे साथ से गुलाम अब गुलफाम हो रहा है। करते...

(3) इतना नहीं मैं काबिल तेरा प्यार कैसे पाऊँ
टूटी हुई वाणी से गुणगान कैसे गाऊँ।
तेरी प्रेरणा से ही सब यह कमाल हो रहा है। करते...

(4) तूने हर कदम डगर पर मुझको दिया सहारा।
मेरी जिन्दगी बदल दी तूने करके इक इशारा।
एहसान पे मैं तेरा एहसान हो रहा है। करते...

(5) तूफान आँधियों में मुझे आपने ही थामा।
तुम कृष्णा बनके आए मैं जब बना सुदामा।
तेरा करम यह मुझ पर सरेआम हो रहा है। करते...
मेरा आपकी कृपा ----

(परम पूज्य महाराज जी की भजन डायरी से)

इस अंक में पढ़िए

- भजन
- चैत्र पूर्णिमा : परम पूजनीय श्री स्वामी जी महाराज का अवतरण दिवस
- 15 मार्च : परम पूजनीय श्री महाराज जी का अवतरण दिवस
- भक्ति
- परम पूजनीय श्री स्वामी जी महाराज के संस्मरण
- प्रश्न-उत्तर
- अनुभूतियाँ
- विभिन्न केन्द्रों पर सम्पन्न कार्यक्रम
- कैलेंडर
- बच्चों के लिए

सत्य साहित्य
मूल्य ₹ 5

लख लख बधाई !

शाश्वत गुरु श्रेष्ठ, परम पूजनीय सदा स्मरणीय श्री स्वामी सत्यानन्द जी 'सरस्वती' के अवतरण दिवस, चैत्र पूर्णिमा, पर शत् शत् नमन!

आध्यात्मिक जीवन गढ़ने वाले युग-पुरुष

भारत की आत्मा 'अध्यात्म' है, इस तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए परम पूजनीय स्वामी जी महाराज ने

आध्यात्मिक जीवन रखने वाले नर–नारियों को गढ़ने के लिए ही श्रीरामशरणम् की स्थापना की। धार्मिक जीवन से व्यक्ति और राष्ट्र का चरम उत्कर्ष संभव नहीं है, इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को अध्यात्म से जोड़ने की आवश्यकता थी। नव स्वतंत्र राष्ट्र को ऐसे चरित्र–सम्पन्न लोगों की आवश्यकता थी, जो स्वार्थ–रहित होकर अपने व्यक्तिगत जीवन को सार्थक बनाएं तथा अपने कृतित्व से राष्ट्र को भी गौरवान्वित करें।

साधना–सत्संगों के माध्यम से श्री स्वामी जी महाराज ने यह प्रशिक्षण आरम्भ किया। 'अपना खाना और अपना भजन करना' की पद्धति देकर श्रीरामशरणम् को स्वार्थ से उत्पन्न होने वाली बुराइयों से सुरक्षित कर दिया गया। श्री स्वामी जी महाराज की 'पद्धति' की ही विशेषता है कि श्रीरामशरणम् के सारे केन्द्र आज भी ठीक वैसे ही चल रहे हैं जैसे श्री स्वामी जी महाराज के समय में चलते थे। इस पद्धति में रंचमात्र भी परिवर्तन की आवश्यकता नहीं है।

परम पूजनीय श्री स्वामी जी महाराज ने शिवाजी और महाराणा प्रताप को भक्तों की सूची में सम्मिलित करके हमें राष्ट्र–भक्ति का पाठ पढ़ाया। 'सभी राम के पूत' का महावाक्य देकर सामाजिक सम–रसता की शिक्षा भी दी। प्रातःकाल जागरण से लेकर कार्य, आजीविका, प्राणायाम, लोक व्यवहार आदि की विधिवत् शिक्षा भी उन्होंने दी। अपने मौलिक ग्रंथ 'भक्ति प्रकाश' में श्री स्वामी जी महाराज ने जीवन का कोई पक्ष ऐसा नहीं छोड़ा, जिस पर मार्गदर्शन के लिए किसी अन्य साधन की ओर ताकना पड़े। कुल मिलाकर लोकजीवन में प्रामाणिक व्यक्ति बनने तथा लौकिक उन्नति करके आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त करने की सरल, सुगम, सरस, सहज, सफलतम साधना–पद्धति प्रदान करने वाले युग–पुरुष के अवतरण दिवस पर उनके श्री चरणों में कोटिशः नमन! जय जय राम!

(एक वरिष्ठ साधक) ■

दिव्य अवतरण दिवस की बधाई !
समर्पण की प्रतिज्ञा लेने का दिन !

सभी राम नाम साधकों के लिए 15 मार्च पावन दिवस है, जब परम पूजनीय श्री महाराज जी का संसार को आरोग्य करने के लिए दिव्य अवतरण हुआ। यह जश्न मनाने और अवतरण दिवस पर नए सिरे से समर्पण की प्रतिज्ञा लेने का दिन है। पूजनीय महाराज जी ने राम नाम की सिद्धि से अनेकों आत्माओं का निस्तारण किया। राम नाम की साधना से हजारों बंदी अपराधियों को पवित्र आत्मा बनाने का चमत्कार किया। वे युवाओं के लिए प्रेरणा और अपने बड़ों के लिए पूर्ण ज्ञान का जीवन्त उदाहरण हैं। स्वयं को परम पूजनीय सद्‌गुरु श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज और दिव्य ज्योति परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज के चरणों में रख कर, पूरी दुनिया में लोगों के जीवन को अनुशासित किया और शिष्य भाव का परिचय दिया।

आज हम जब गुरु–वचन सुनते हैं, तो बंध जाते हैं। अपनी सरल भाषा में और सरल उदाहरणों से उन्होंने हर तरह के विषय को राम नाम से समझाया। आज भी सूक्ष्म रुप या गुरुतत्व के रुप में हर साधक के पास खड़े हैं और देखते हैं कि हमारी साधना निर्विघ्न चल रही है। वे हमारा हाथ पकड़ कर हमें कठिन और प्रतिकूल परिस्थितियों से पार करने में मदद करते हैं। अपनी उपस्थिति की अनुभूति से जीवन की बाधाओं को दूर कर अद्वितीय श्रद्धा पैदा करते हैं।

उनका परिवार तीव्रता से बढ़ रहा है, क्योंकि हजारों नए साधक जुड़ रहे हैं और वह हर एक साधक के जीवन में जीवन्त रुप से काम कर रहे हैं। आज भी वे सिर्फ एक आवाज़ की दूरी पर हैं—ऐसे हैं हमारे गुरुदेव और उनका गुरु तत्व। अनन्त राम नाम भाव से दिव्य अवतरण दिवस मनाएँ!

(एक साधक की अभिव्यक्ति) ■

अनन्य-भक्ति

सत्यानन्द

रात्रि के समय भजन करने वाले को संत–कृपा प्राप्त होती है। भक्त रात को राम धुन गाता हो, आकाशलोक का कोई दर्शक सुन ले 'सारी दुनिया इक पासे, मेरा राम अकेला इक पासे' तो गायक आशीर्वाद पाता है। संतकृपा का एक क्षण जीव की जन्म भर की कमाई से अधिक महत्व रखता है।

बी.ए. और एम.ए. की परीक्षा के लिए अधिक से अधिक समय लगाते हो, किन्तु राम–भजन में नहीं। विचार–शक्ति से काम लो। राम–कृपा सहज नहीं है। वह अधिक से अधिक श्रम करने से ही सम्भव है। अविराम निरन्तर साधना करनी चाहिए। बड़े मान और आदर के साथ ध्यान में बैठना चाहिए। चारों ओर शान्ति हो, ऐसे समय में अभ्यास करो। भावना ऊँची होनी चाहिए। इस कार्य के लिए अधिक से अधिक समय दो। समय प्रशान्त होवे। अखण्ड जाप भी पुरुषार्थी के लिए है। जप करते–करते अनुभूतियाँ होती हैं, यह एक शिक्षण है।

'भगवान में अनन्य भाव यदि हो, तो उद्धार हो ही गया। मरने से बचने की चिन्ता की कोई बात नहीं है।' भगवान का वचन है, भक्त को विश्वास दिलाया है। प्रामाणिक वचन भगवान के विश्वसनीय हैं। फिर सन्देह की बात इस भगवद्–वाक्य में क्यों हो ?

लिखे–पढ़े आदमी में संतोष बहुत कम है। कारण कि उसकी इच्छाएँ बहुत हो गई हैं, जो पूरी होनी असम्भव हैं। मनुष्य में धारणा नहीं रही। धार्मिक जगत भी बहुत चंचल है। इस कारण भगवान की विभूतियों का अवतरण नहीं होता। भगवान तो उद्धार करते हैं, किन्तु तब, जब कि हमारी भक्ति अनन्य हो, अन्यत्र दृष्टि न हो। जब मन बुद्धि भगवान में लग जाए, तो भगवान में ही भावना से, भावनामय जगत में, मनुष्य भगवान के समीप रहता है। भंवरा दूर वन से कमल में आ जाता है, किन्तु पानी में रहने वाला मेंढक कमल में नहीं आ पाता।

अनन्य भक्ति बड़ी ऊँची है, मनन करने से वह आती है। भगवान के द्वार पर जाकर, फिर अन्य द्वार जाकर खटखटाता फिरे, तो शोभा नहीं देता। अनन्य भक्ति सर्वश्रेष्ठ भक्ति है, सर्वोच्च है। परा–विद्या ही अनन्य भक्ति है।

भगवान के द्वार पर जाकर, फिर अन्य द्वार जाकर खटखटाता फिरे, तो शोभा नहीं देता

नारद भक्तिसूत्र में कहा है–'परमेश्वर में परम प्रेम हो', पतंजलि ने कहा है– यज्जपस्तदर्थभावनम्।' बार बार आराधित किया हुआ भगवान, उस व्यक्ति पर अनुग्रह करने लगता है। सब ग्रन्थ इस बात को दोहराते हैं। अतः अनन्य–भक्ति का साधन करो। अवश्यमेव कल्याण होगा। गीता के अध्याय बारह में, वर्णित अनन्य–भक्त के लक्षणों का पाठ करो, कण्ठाग्र करो और जीवन में उतारो, तब लाभ होगा।

साधना– सत्संग हरिद्वार

(प्रवचन पीयूष, पृष्ठ 329–330) ■

परमेश्वर मेरे अंग-संग हैं, तो फिर किस चीज़ का भय?

प्रेम

परमेश्वर के नाम में प्रीति पैदा करने के लिए राम नाम का हर समय आराधन करना है। जो कोई चीज़ अच्छी देखें, परमेश्वर की लीला समझ कर उसी का सिमरन करना चाहिए। यदि कोई फुलवारी, नदी, चश्मे को देखें, उसी में लीला देख कर, परमेश्वर को याद करें– उससे प्रीति पैदा होती है।

इसी प्रकार कोई साथी मिले, बन्धु मिले, किसी की तारीफ सुनें, परमेश्वर तेरी अपार कृपा है जो तूने संगी मिलाप प्रदान किया है। इसी प्रकार आस–पास के लोगों को देख कर भी धन्यवाद करना चाहिए कि कितने अच्छे पड़ोसी, अच्छे साथी हैं, यह सब तेरी ही कृपा है। यदि कारणवश कोई दुःख भी आ जाए तो इसमें घबराए नहीं, प्रार्थना करें, आशीर्वाद माँगें। विश्वास हो कि वह खुद ही सम्भाल लेगा, विघ्न टल जाएगा, ऐसा विश्वास होना चाहिए। अपने कर्तव्यों का पालन करते रहना चाहिए, वह स्वयं कृपा कर देगा। ये जो समय आया है, वह कट जाएगा, घबराना नहीं, डांवांडोल नहीं होना। इससे कुछ बनता नहीं, यह विश्वास की कमी है। परमेश्वर मेरे अंग–संग हैं, तो फिर किस चीज़ का भय?

परन्तु जब हम परमेश्वर की कृपा माँगते हैं, तो मन में स्थिरता बनी रहती है, डांवांडोल नहीं होना, दुःख आते हैं, चले जाते हैं। एक किसी बहन के भाई मर गए, कहने लगे कि दुःख इतना आया परन्तु कट गया।

परम पूजनीय श्री स्वामी जी महाराज कलकत्ता गए, जिनके पास ठहरना था, उसका लड़का मर गया। महाराज जी अफसोस करने लगे, तो सेठ ने बात टाल दी, सेठानी रोने लगी। चाय पर बैठे तो कहने लगे कि महाराज यह आपकी कृपा है, आपके ग्रन्थों की कृपा है, मुझे इतना धैर्य दिया है, स्थिरता दी है कि मैं डोला नहीं। विधाता का विधान है, कोई क्या कर सकता है।

हर समय परमेश्वर को पास समझकर अपने कर्तव्यों का पालन करें, लीला को देखें, सराहें। विश्वास बढ़ता ही जाएगा। हर में परमेश्वर को देख कर प्रीति करना, कोई बुरा भी कहे, बुरा नहीं मानना। परमेश्वर को सामने रखकर, परमेश्वर को अपने संकट लखना (वर्णन करना), सबसे उत्तम साधन है।

परमेश्वर तेरी महान शक्ति है, यह सब तेरी ही कृपा की करणी है जो यह विश्वास हुआ है। तेरी कृपा के बिना सब नीरस है। परमेश्वर तू कृपा कर, कि हर समय हम तुम्हें ही देखें, घबराएँ नहीं, इसे भी तेरी ही कृपा जानकर स्वीकार करें। परमेश्वर श्री राम तेरी कृपा हो, कृपा हो।

(पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज के मुखारविन्द से, हरिद्वार साधना सत्संग, 30-3-1969, परम पूजनीय श्री विश्वामित्र जी महाराज द्वारा डायरी में नोट किए गए) ■

भक्ति अविनाशी सुख

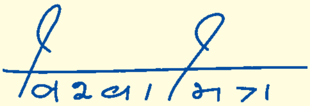

(सत्य साहित्य के जनवरी 2016 अंक से आगे का लेख)

कबीर जी महाराज से किसी ने पूछा,"राम नाम का इतना प्रताप गाया है, आपने भी गाया है, अन्य संतों महात्माओं ने भी गाया है। क्या बात है, महाराज! जो आपको प्राप्त हुआ, हमें आज तक, अभी तक अनुभव नहीं हुआ"। कबीर जी महाराज एक सुन्दर उदाहरण देते हैं कहते हैं,"एक किसान है उसके पास सुन्दर उपजाऊ भूमि है, अति अच्छा बीज किसी फार्म से लेकर बो दिया है, खाद बहुत अच्छी है, सिंचाई भी बहुत अच्छी की है, वर्षा भी हो गई, फसल भी लहलहाती, खेत सारा फसल से लहलहा रहा है, कबीर साहब कहते हैं, अब यदि कोई मूर्ख व्यक्ति अपने खेत में पशु छोड़ देता है तो ऐसे किसान को कभी कुछ मिल नहीं पायेगा। फसल तैयार है, स्वयं ही तैयार की है, लेकिन पशु छोड़ के चरा दिया तो फसल किसान के हाथ नहीं आयेगी। कबीर जी कहते हमारी यही हालत है, नाम की कमाई बहुत करते हैं, लेकिन कामना रुपी पशु बीच में छोड़ कर सारी की सारी फसल को हम बर्बाद कर देते हैं, भगवान श्री राम, लक्ष्मण जी के साथ, जब विश्वामित्र जी के यज्ञ की पूर्ति के लिए आये, जानते हो सबसे पहले किसको मारा, याद है न आपको महर्षि विश्वामित्र ने कहा यह ताड़का मिलने वाली है सबसे पहले इसको मारो। क्यों ? संत महात्मा कहते हैं यह ताड़का दुराशा है, आशा, नहीं दुराशा। क्या अर्थ है इसका ? संत महात्मा समझाते हैं, दुराशा उसे कहा जाता है नाम तो परमात्मा का जपते लेकिन आशा संसार से रखो इसको संत महात्मा दुराशा कहते हैं। तो हमारा प्रथम शत्रु कौन? ताड़का, यही तो हम कर रहे हैं, नाम तो परमात्मा का जपते हैं आशा औरों से रखते हैं, यह दुराशा है। सोचें भगवान् कितना अपमानित अपने आपको मानते होंगे। क्या विश्वास है, इस व्यक्ति में? यदि मेरे नाम जपते हुए भी दूसरों के ऊपर दृष्टि रखता है, आँखें दूसरों के ऊपर हैं, इतना विश्वास नहीं कि मैं इसे क्या–क्या दे सकता हूँ। ''आशा एक राम से दूजी आशा छोड़ दे।'' विश्वामित्र के आदेश से ताड़का को पहले मरवा दिया, दुराशा को पहले मार दिया। यह भूख, यह तड़प तो हम सबके अन्दर जगनी चाहिए। उस सुख की अनुभूति जब तक हमें नहीं होती हमें चैन नहीं आता। हमारी बेचैनी का कारण ही एक है कि उस सुख की अनुभूति आज तक नहीं हुई इसलिए परमेश्वर तेरी कृपा हो, तेरी कृपा से सुख की अनुभूति होगी, तू करवा दे। कभी भी हो जाए तो जन्म जन्मान्तरों की बेचैनी हमारी दूर हो जाएगी। बस तू कृपा कर, कृपा कर, कृपा कर।

"मैं अपना मन हरि संग जोड़ा।
हरि सों जोड़ सभी संग तोड़ा।।"

पहला भाग तो सम्भव हो सकता है, प्रयत्न के बाद, लाख प्रयत्न के बाद परमेश्वर की कृपा से, गुरु कृपा से पहला भाग तो संभव हो जाता है लेकिन दूसरा भाग असंभव ही बना रहता है। सबसे टूटती नहीं। परमेश्वर से जुड़ सकती है लेकिन सबसे टूटती नहीं है। यह बहुत कठिन बात है, मोह छूटता नहीं। कहना बहुत आसान है, करके दिखाना कठिन। अविनाशी

सुख ऐसा सुख जिसे प्राप्त करके और कुछ प्राप्त करने की चाह नहीं रहती। अविनाशी सुख सदा रहने वाला सुख, सबसे बड़ा सुख, सबसे ऊँचा सुख, अत्यांतिक सुख जिसे कहते हैं, परमानन्द जिसे कहते हैं। शाश्वत शान्ति जिसे कहते हैं परमात्मा का मिलन जिसे कहा जाता है। भगवत् प्राप्ति, राम मिलन जिसे कहा जाता है। आत्मा का साक्षात्कार जिसे कहा जाता है। परमात्मा का साक्षात्कार जिसे कहा जाता है, उसीको अविनाशी सुख कहा जाता है, परमधाम कहा जाता है। मानो, मानव जन्म की उच्चतम उपलब्धि, जिसके लिए यह मानव जन्म मिला है, वह है अविनाशी सुख की प्राप्ति। जब तक यह प्राप्त नहीं होता, तब तक जीवन कृतकृत्य नहीं होता, अधूरापन बना रहता है। जैसे ही इसकी प्राप्ति हो जाती है, बस सब कुछ मिल जाता है। उसके बाद कुछ और पाने की इच्छा ही नहीं जगती। तुम्हें पा कर सब कुछ पा लिया। उसी सुख की खोज हर व्यक्ति कर रहा है। सुख तो वह भीतर है, लेकिन खोज हमारी बाहर है, प्रयत्न ही गलत है तो इसलिए सुख मिलेगा कहाँ से? बाहर जहाँ हम ढूँढ रहे हैं, वहाँ तो वह सुख है ही नहीं। आप कहोगे,'नहीं' यह झूठ बोलता है, सुख तो है, खाते हैं, सुख मिलता है, भोग भोगते हैं, सुख मिलता है, पुत्र जन्मता है सुख मिलता है, इत्यादि। सुख तो मिलता है लेकिन वह सुख क्षणिक है। वह सुख, सुख नहीं। जिस सुख की खोज के लिए मानव जीवन मिला हुआ है। यह सुख तो क्षणिक है, सुख – आया और चला गया। नाश्ता किया जितना मर्ज़ी पेट भर लीजिए, दोपहर को यदि खाना नहीं खाएँगे, तो रात को तो अवश्य खाएँगे। इतनी ही अवधि है उस सुख की, क्षणिक सुख। लेकिन खोज जो है लक्ष्य जो है, वह तो है अविनाशी सुख और जब तक प्राप्त नहीं होता, अनेक जन्म भी बीत जाते हैं तो भी उदासी दूर नहीं होती, अशान्ति दूर नहीं होती। यही तो कहते हो न, बहुत देर हो गई भजन पाठ करते हुए, जीवन समाप्त होने को आ रहा है, लेकिन उदासी या अशान्ति अभी तक बनी हुई है। यह तब तक बनी रहेगी, जब तक अविनाशी सुख की प्राप्ति नहीं होती। भीतर है वह सुख, वह सुख बाहर नहीं है, बाहर वाले संसार में व्यवहारिक संसार में, वह सुख नहीं है। एक बात जान लीजिएगा, वह सुख जो भीतर का संसार है, भीतर का जगत है, वहाँ है। भीतर मुड़ना कठिन है, परमेश्वर ने हमारे साथ बड़ा भारी खेल खेला हुआ है, हमारी सारी की सारी इन्द्रियाँ बहिर्मुखी बनाई हुई हैं, लेकिन संत कहते हैं भीतर की ओर मुड़िएगा तब बात बनेगी। आँख बाहर की ओर है, नासिका बाहर की ओर है, सबकी सब इन्द्रियां देख लीजिएगा, वह बहिर्मुखी हैं, कोई भी अन्तर्मुखी नहीं है। संत महात्मा कहते हैं तब तक अविनाशी सुख की प्राप्ति नहीं हो सकती क्योंकि वह सुख तो भीतर है। सर्वोत्कृष्ट सुख भीतर बहुत बड़ी चीज़ है संसार में। जब बड़ी चीज़ पानी होती है तो छोटी–छोटी चीज़ें त्यागनी होंगी। तभी जाकर उस उच्चतम चीज़ की प्राप्ति होगी।

कुछ पाना चाहते हो तो, कुछ छोड़ना पड़ेगा, कुछ त्यागना पड़ेगा। इसके बिना काम नहीं चलता।

एक गांव में बड़ा पुराना मन्दिर 'अपर्णा देवी का मन्दिर', किसी एक व्यक्ति की दुकान पर बड़ा भारी रश। वैसे तो यहाँ सारा साल यात्री आते रहते हैं, लेकिन एक ही दुकान जिस पर बड़ा भारी रश। कुछ एक यात्री उसके पास गए और कहा,"क्या बात है, आपकी दुकान पर रश है, बाकी सब खाली बैठे हैं।" कहने लगा,"इसके पीछे एक रहस्य है, मेरी हालत कुछ ऐसी ही थी, मेरी दुकान पर भी कोई

नहीं आया करता था, खाने के लिए घर में रोटी नहीं थी। ऐसे बैठे रहते थे, जैसे और दुकानदार बैठे हैं। एक दिन एक महात्मा आए, मैंने अपनी व्यथा वर्णन करी। महात्मा ने कहा,"कुछ पाना ही पाना चाहते हो या देना भी चाहते हो"? मैं उनकी बात समझा नहीं। महात्मा ने कहा "तुम्हारे घर में कुआँ है, पीछे घर है आगे दुकान है, एक कोने में एक प्याऊ आरम्भ कर दो। यात्रियों को पानी पिलाना शुरु कर दो"। "मैंने उनके कहे अनुसार दुकान के ही एक कोने में एक प्याऊ खोल लिया, कभी मैं बैठता, कभी मेरी पत्नी, कभी मेरा पुत्र, पानी पिलाता। घर के आँगन में एक पेड़ था, वहाँ दो–चार चारपाइयाँ यात्रियों के आराम के लिए बिछा दीं। लोग आने लगे, पानी पीते, विश्राम करते, फिर पानी पीते। इस प्रकार मेरे घर में और प्याऊ में यात्रियों का ताँता लगने लग गया। सारे के सारे ग्राहक मेरी ओर मुड़ने लग गए, अब दो नौकर भी हैं मेरे पास, तब भी मेरा काम निपटता नहीं।''

कुछ पाना चाहते हो तो, कुछ छोड़ना पड़ेगा, कुछ त्यागना पड़ेगा। इसके बिना काम नहीं चलता। स्वामी रामसुखदास जी महाराज की कथनी बड़ी सुन्दर, याद आती है,''जीवन में कुछ भी बन जाओ, बहुत बड़े वक्ता, संगीतकार, विद्वान, कथा वाचक बन जाओ, अनेक किताबें लिख डालो, करोड़पति बन जाओ, गुरु की पद्वी प्राप्त कर लो, लोगों से जय जयकार करवाओ, यश–मान की प्राप्ति होने लग जाए, जब तक सांसारिक सुख की चाह बनी रहेगी, तब तक अविनाशी सुख की प्राप्ति नहीं होगी। चाह छोड़ोगे तो सुख जितना अपेक्षित है, उससे ज्यादा ही मिलेगा। चाह छोड़ कर देखिएगा।'' एक ज़मीदार बीज बोता है, बीज ही तो प्राप्त करता है, उसके बाद, फल भी तो बीज ही हैं, जो बोता है वही काटता है, वही उसके हिस्से में आता है, मानो प्रचुर मात्रा में आता है इससे अधिक तो कुछ नहीं होता। लेकिन जो बीज नहीं बोता यदि वह धरती को खोदता है तो उसे, जैसे राजा जनक की बात देखिएगा उसे मातेश्वरी सीता मिलीं। किसान चाह रख कर बीज बोता है, राजा जनक ने चाह रख कर कुछ नहीं किया, उसे मातेश्वरी भक्ति की प्राप्ति हुई।

इस अविनाशी सुख को कैसे प्राप्त करें? बहुत साधन तो ज्ञानी लोग बताते हैं, मैं तुच्छ बुद्धि आपको कुछ नहीं बता सकूँगा। सुनी–सुनाई, पढ़ी–लिखी, थोड़ी–थोड़ी बाते हैं, वही आपकी सेवा में प्रस्तुत कर सकूँगा या जो गुरुजनों के जीवन से देखा है, वही आपके सामने प्रस्तुत है। एक ही मुख्य साधन हमारे लिए इस परमानन्द का साधन है। वह क्या है? वह है भगवत्भक्ति।

(मूलतः 'समन्वय साधना पथ', वर्ष 2004 में प्रकाशित) ■

संस्मरण

परम पूजनीय श्री स्वामी जी महाराज के संस्मरण

एक बार स्वामी जी यू.पी. गए तो वहाँ एक महात्मा के चरणों पर उसके शिष्य घण्टों पड़े रहते –ऐसा देखा। उस महात्मा ने अपने शिष्यों को कहा कि वे स्वामी जी के चरणों में भी पड़ें। स्वामी जी ने कहा,''मैं तो ऐसा नहीं करवाता। आप ऐसा क्यों करवाते हैं?'' उस महात्मा ने कहा, पांव पर पड़ने से शिष्यों में श्रद्धा बढ़ती है''। स्वामी जी ने कहा, ''मैं तो सेवक हूं, सब में परमात्मा को देखते हुए, सब का आदर करते हुए, सबकी सेवा करता हूं–करनी चाहिए।'' परमात्मा श्री राम ! हम तेरी चरण शरण में हैं, सब पर कृपा हो।

(परम पूजनीय महाराज जी की डॉयरी से) ■

तरुण साधकों से श्री परम पूजनीय महाराज जी का वार्तालाप

प्र. महाराज जी, क्या स्वामी बनना कठिन है ?

पूजनीय महाराज जी : बहुत अच्छा प्रश्न है। इसमें कोई शक नहीं कि स्वामी बनना बहुत कठिन है। मेरे विचार में स्वामी का अर्थ है, एक अच्छा इन्सान, एक अच्छा मानव। उसे आप स्वामी कह सकते हैं, महाराज कह सकते हैं, संत कह सकते हैं। पर मेरी नजर में स्वामी एक बेहतर मानव है। हम मानव की तरह दिखते हैं, यदि हम अपने भीतर झांकते हैं, अन्दर जाते हैं, अपने कर्मों को देखते हैं तो ऐसा कहना कठिन है। अगर सारे नहीं तो कुछ कर्म तो पशुओं के जैसे हैं। हर कोई बेशक मानव दिखता है, पर वह व्यवहार में मानव की तरह नहीं है। वह एक बेहतर मानव है जो वैसी गल्तियां नहीं करता जैसी आम मानव करता है। स्वामी वे हैं, जो अपनी हर सम्भव कोशिश करके मानव की तरह व्यवहार करता है। स्वामी के सिर पर सींग नहीं उग आते। बहुत कठिन है स्वामी बनना–गल्ती न करने वाला मानव।

प्र. महाराज जी, बच्चों को किस प्रकार से गाइड किया जाए ?

पूजनीय महाराज जी : रबिन्द्रनाथ टैगोर की बहुत अच्छी कहानी है। वह किसी परिवार के बारे में लिखते हैं। बहुत छोटी आयु में दो बच्चों के माता पिता की मृत्यु हो गई। दो भाई–भाई हैं, माता पिता नहीं रहे। बड़े भाई ने सोचा उस पर बड़ी भारी जिम्मेदारी आ गई है। छोटे को पढ़ाना है, कमाई करनी है, इत्यादि इत्यादि। थकान महसूस होने लग गई, कमाते कमाते, शराब पीने लग गए, सिगरेट पीने लग गए। ऐसा लगता होगा, ऐसा करने से उसकी थकान दूर हो जाएगी। टैंशन दूर हो जाती है। छोटा भाई नित्य देखता, बड़े भाई को ऐसा करते हुए। ऐसा करते हुए, उसने भी शराब पीनी शुरु कर दी। कभी चोरी, छिप–छिप के बड़े भाई को पता न लग जाए कि मैं शराब पी रहा हूँ या सिगरेट पी रहा हूँ। एक दिन बड़े भाई ने चोरी पकड़ ली। डांटा, छोटे भाई ने तुरन्त कहा,''जिस चीज़ के लिए आप मुझे डांट रहे हो, आप भी तो वही करते हो।'' आज छोटे ने इस प्रकार कहा, तो बड़े को बहुत बड़ा धक्का लगा। ''मैं कारण हूँ इसकी आदत को बिगाड़ने वाला, मैं कारण हूँ, जिसके कारण इसे गल्त आदत पड़ी।'' रबिन्द्रनाथ टैगोर लिखते हैं, उसके बाद बड़े भाई ने वह सब करना छोड़ दिया। छोटे को सम्भालने की जरुरत नहीं पड़ी, कुछ कहने की जरुरत नहीं पड़ी। मैं आपसे सहमत हूँ, देवी ! इनको समझाने की जरुरत नहीं पड़ती। They are so intelligent to follow you, what you are doing. । माता पिता के ऊपर आज के युग में बहुत भारी जिम्मेदारी है। उन्हें बहुत सावधान होना होगा। आप इनके सामने झूठ बोलो और इनको कहो झूठ मत बोलो–आज का बच्चा झट से आपके मुँह पर कहेगा,''आप भी तो झूठ बोलते हो।'' आपको बहुत सावधान रहना होगा। जिस घर में कलह क्लेश होता है, माता पिता आपस में लड़ाई करते हैं, सबसे बुरा प्रभाव किस पर पड़ता है – बच्चों पर। माता पिता का काम सिर्फ बच्चे पैदा करना नहीं है। उनको बनाना भी है, उनको सही दिशा दिखाना भी है। आवश्यकता है कि माता पिता स्वयं सही दिशा में रहें, ताकि बच्चे भी अपने आप परमेश्वर की कृपा से सही दिशा में रहेंगे।

प्र. महाराज जी, अन्य धर्म जिन विषयों को देखते हैं, उन पर हिन्दु धर्म की क्या राय है? हिन्दु विचारधारा क्या कहती है ?

पूजनीय महाराज जी : हिन्दु धर्म एक विचारधारा है। कृपया यह मान कर चलें। बेटा! बाकी धर्म जो आप कह रहे हो वह हिन्दु धर्म से ही प्रस्फुटित हुए हैं। वे स्वतन्त्र धर्म नहीं हैं, वे केवल हिन्दु धर्म से

अंकुरित हैं। आपने कहानी सुनी ही होगी। जब स्वामी विवेकानन्द अमेरिका आए तो कुछ लोगों ने मिल कर उनका मजाक करने के लिए श्रीमद्भगवदगीता को सबके नीचे रख दिया, उसके ऊपर उन्होंने कुरान रख दी, उसके ऊपर बाईबल रख दी, और बाकी ग्रन्थ रख दिए। लोगों ने स्वामी विवेकानन्द को बुला कर कहा, ''ओ स्वामी देखो! आपका ग्रन्थ कौन से स्थान पर है।' आप तो स्वामी विवेकानन्द के विलक्षण विवेक को जानते ही हैं, उन्होंने कहा, ''जड़ जो होती है, मूल जो होता है, वह नीचे ही होता है, बाकी सब उसके ऊपर होता है।' यह जड़ है, यह मूल है, यहीं से बाकी सब पैदा होते हैं। आपने बिल्कुल ठीक स्थान पर रखा है। बेटा ! हिन्दु धर्म तो जड़ है। बाकी सारे धर्म जो हैं किसी ने इसका भाग लेकर, अपना धर्म खड़ा कर लिया। यह किसी धर्म की आलोचना नहीं, शास्त्र ऐसा कहते हैं।

प्र. महाराज जी, माता पिता और बच्चों को मिल कर कैसे काम करना चाहिए ?

पूजनीय महाराज जी : हम एक दूसरे से अपेक्षाएँ रखते हैं। बच्चे माता पिता से और माता पिता बच्चों से अपेक्षा रखते हैं। यह केवल आपस की ऐडजस्टमैंट है, बस। अगर माता पिता ऐडजस्ट करने की कोशिश करेंगे, तो मुझे विश्वास है कि बच्चे भी अधिकतम ऐडजस्ट करेंगे। यह आपस के तालमेल का विषय है। बस यही तो चाहिए।

प्र. महाराज जी, क्या बच्चों को सही रास्ते पर चलाने के लिए दबाव का प्रयोग करना चाहिए?

पूजनीय महाराज जी : जब दबाव अपने अन्दर से स्वयं के लिए होता है, तो वह दबाव नहीं होता। यह तो अनुशासन होता है।

प्र. महाराज जी, एक बालिका होने के नाते, इस आयु में मेरे क्या कर्तव्य हैं ?

पूजनीय महाराज जी : बेटा! डयूटी का अर्थ है कर्तव्य का पालन करना। उससे यह तात्पर्य है कि एक पुत्र या पुत्री का माता पिता के प्रति क्या कर्तव्य होना चाहिए? हिन्दु परम्परा सिखाती है कि अपने माता पिता की आज्ञा का पालन करना चाहिए, जो आप करते हैं। जब आप माँ बनोगी, तो अपने बच्चों की देखभाल की डयूटी करनी चाहिए। इसी तरह जब आप बहू बनोगी, तो बहू होने के नाते जो कर्तव्य हैं, अपनी सास के प्रति, ससुर के प्रति, उनके सम्बन्धियों के प्रति, उन्हें ठीक ढंग से निभाना चाहिए। ठीक ढंग से निभा रहे हैं, कैसे पता चलेगा? जिस कर्म को करके भीतर कोई गलत प्रभाव नहीं होता, उसकी कोई प्रतिक्रिया नहीं होती, तो समझ लेना चाहिए, यह कर्म ठीक है। यह समझने में बहुत सरल है। आपको किसी से पूछने की आवश्यकता नहीं कि मेरा कर्म ठीक है कि नहीं।

पाप कर्म करने वाला ठीक नींद नहीं सो सकता। दिन भर जिसने कुकर्म किए हों, बेईमानी की हो, अत्याचार किए हों, उसको रात को सोने के लिए नींद की गोली लेनी पड़ती है, या शराब पीनी पड़ती है, या कुछ और करना पड़ता है। जिसने अपना कर्तव्य ठीक ढंग से निभाया हुआ है, उसको बिल्कुल ऐसा कुछ नहीं करना पड़ता। वहाँ कोई प्रतिक्रिया नहीं होती। डयूटी स्वाभाविक होती है। आपको परमात्मा से प्रसन्नता का अनुभव होता है। यह सही कर्म है। पाप क्या है, पुण्य क्या है ? भगवान श्री कृष्ण कहते हैं कि यह बहुत दुविधा वाली बात है। बेटा! मेरी एक परिभाषा है – पाप और पुण्य समझने के लिए, ऐसा विचार, ऐसा वचन, ऐसा कर्म जो आपको परमेश्वर से दूर ले जाए, उसे पाप समझना चाहिए और जो परमात्मा के नज़दीक ले जाए, उसे पुण्य कर्म समझना चाहिए। एक अच्छा कर्म परमात्मा के लिए–उसे पुण्य कर्म मत कहो– पाप–पुण्य, ये शब्द गलत हैं। कर्म–जो परमात्मा को प्रसन्न करे– परमात्मा का कर्म, परमात्मा के लिए कर्म – यही

वह चाहता है। जो करना चाहते हो करो, वह मेरे लिए हो। भक्ति मार्ग बड़ा विचित्र है। इसमें आप छः घण्टे की जगह आठ घण्टे सोते हो ? इस प्रकार से सोते हो, कि परमात्मा के श्री चरणों में सिर रख कर सोए हुए हो, तो परमात्मा कहते हैं, मैं इसे भक्ति मानता हूँ। याद रखो, बहुत देर तक आठ घण्टे वह सोने नहीं देगा। शुरु में तो वह आपको आठ घण्टे सोने देगा, पर थोड़ी देर बाद, वह अपने पाँव हिलाएगा–उतिष्ठ, उठो–सोए नहीं रहना है। जागना है– जगाएगा, उठाएगा। भजन पाठ कीजिएगा, अपने कर्तव्य कीजिएगा। भक्ति में हर चीज़ को, हर कर्म को भक्ति बनाया जा सकता हैं। सिर्फ भाव की आवश्यकता है। जो भी कर रहे हो – वह उसी भाव से करना है।

प्र. महाराज जी, क्या हम बच्चे जो चाहते हैं, वह कर सकते हैं?

पूजनीय महाराज जी : अगर वे जुआ या चोरी हैं, तो क्या वह अच्छा है? अगर सब फैसले आपके हैं, तो माता पिता किस लिए हैं? अध्यापक किस लिए हैं?

प्र. महाराज जी, मैं श्री अमृतवाणी दो साल से पढ़ रहा हूँ। हमें राम की परिभाषा बताइए?

पूजनीय महाराज जी : बेटा! स्वामी जी ने जो स्थापित किया है, जो परामर्श दिया है, वह यह है कि ''राम नाम जपो''। वे कहते हैं, रुप के बारे में मत सोचो, उसके पीछे मत जाओ, क्योंकि जब स्वामी जी को साक्षात्कार हुआ, तो परमात्मा ने प्रश्न किया। तब स्वामी जी ने कहा, ''मुझे अपना रुप दिखाइए।'' प्रभु ने पूछा, ''किस रुप का दर्शन चाहते हो?'' स्वामी जी ने कहा,''मैं जानता हूँ आप क्या हैं। यदि रुप मुझ पर निर्भर होता तो मुझे पूछने की आवश्यकता नहीं थी। आपका जो स्वरुप है, मुझे दिखाइए। तब परमात्मा स्वामी जी के सम्मुख अपने ज्योतिर्मय स्वरुप, सर्वशक्तिमान स्वरुप, ज्योतिर्मय जगदीश स्वरुप में प्रकट हुए।

चिन्ता न करो। सिर्फ राम राम, राम राम, राम राम जपते रहो। राम की महिमा अमृतवाणी में गाई गई है। हम इस पर स्थिर रहें। हमारे हित में यही है कि हम इसका दृढ़ता से पालन करें, बाकी सब स्वयं होगा।

प्र. महाराज जी, हम इस व्यवहारिक संसार पर कैसे विश्वास करें ?

पूजनीय महाराज जी : बेटा! विश्वास सिखाया नहीं जा सकता। यह ऐसी चीज़ नहीं है जिसे विद्यार्थी को सिखाया जा सके।

प्र. महाराज जी, स्वामी जी को ज्योति स्वरुप दर्शन हुए- तो राम नाम क्यों ? और कोई नाम क्यों नहीं ?

पूजनीय महाराज जी : यह परमेश्वर की तरफ से स्वामी जी को आदेश हुआ, कि ''राम भज, राम भज''। कालान्तर में स्वामी जी महाराज से यह प्रश्न किया गया, ''आप राम ही क्यों कहते हो, कृष्ण क्यों नहीं?'' स्वामी जी महाराज ने कहा, ''मुझे कृष्ण कहने में कोई एतराज़ नहीं है, यह तो मेरे गुरु ने, मेरे परब्रह्म परमात्मा ने मुझे कहा है राम कहने के लिए, तो मैं राम कह रहा हूँ। इसके बावजूद भी, मुझे कृष्ण कहने में कोई एतराज़ नहीं है। ये कृष्ण वही हैं जिन्हें मैं राम कह रहा हूँ।

प्र. महाराज जी, आप सदा प्रसन्न और विनम्र कैसे रहते हैं ?

पूजनीय महाराज जी : मैं कहूँगा बेटा! यह सब उसकी कृपा है– बस। मेरे जीवन में और कुछ नहीं बस उसकी कृपा है। अगर मैं कहूँ कि मैं परमात्मा की कृपा का प्रतीक हूँ, तो बेटा मैं गलत नहीं हूँ। क्या आपको मेरी शैक्षिक योग्यता का पता है ? परमात्मा की कृपा ने मुझे कहाँ से कहाँ पहुँचा दिया है। यह

मेरा अपना प्रयास नहीं है। मुझे लगता है, कोई मेरे भाग्य की लाइन देखे, तो वह भी यह नहीं बताती होगी, कि मुझे इस प्रक्रिया से निकल कर यहाँ तक पहुँचना है। उसकी कृपा ने मेरे जीवन में चमत्कार कर दिए हैं। केवल उसकी कृपा ही यह सब कुछ कर सकती है।

मुझे लगता है, समय हो गया मैं प्रार्थना से इसे समाप्त करता हूँ। प्रार्थना यह है–प्रार्थना तो परमात्मा से ही होती है। हमारी प्रार्थना है कि हे परमात्मा! हम पर यह कृपा करें कि हम आपका सतत् स्मरण करते हुए, अपने कर्तव्यों का पालन करें।

यही विनती है पल पल छिन छिन ।
यही विनती है पल पल छिन छिन ।
श्री राम तुम्हारे चरणों में।
हो ध्यान तुम्हारे चरणों में।
यही विनती है पल पल छिन छिन ।
होठों पै तुम्हारा नाम रहे।
होठों पै तुम्हारा नाम रहे।
शुभ सिमरन यह सब याम रहे।

दिन रात यही मेरा काम रहे।
दिन रात यही मेरा काम रहे।
हो ध्यान तुम्हारे चरणों में।
श्री राम तुम्हारे चरणों में।
यही विनती है पल पल छिन छिन ।
यही विनती है पल पल छिन छिन ।
श्री राम तुम्हारे चरणों में।
हो ध्यान तुम्हारे चरणों में।
यही विनती है पल पल छिन छिन ।
यही विनती है पल पल छिन छिन ।

(परम पूजनीय महाराज जी से 1999 में अमेरिका में तरुण साधकों से वार्तालाप के कुछ अंश। परम पूजनीय महाराज जी के उत्तर शब्दशः अनुवादित हैं, प्रश्नों को आवश्यकतानुसार संशोधित किया गया है।) ■

अनुभूतियाँ

'भक्तों की झोली में प्रभु असीम कृपा बरसा रहे हैं'

प्रभु जी, आपने हमें अपनी चरण–शरण में लेकर, हमारा जीवन सफल कर दिया। गुरु जी, अभी मैं रात्री का भोजन बनाने के लिए रसोई में गई ही थी, कि मेरा मन हुआ कि मैं अन्दर जाकर प्रभु राम का नाम सिमरन करुँ। हाथ में लिए कार्य को मैं पूरा करने में लग गई। तो ऐसा आभास हुआ कि परम प्रभु जो मुझे कुछ विशेष प्रदान करना चाहते हैं, उसका समय निकला जा रहा है। मैं यहां तक कि अपनी चुन्नी उठाने के लिए, दूसरे कमरे में जाने लगी, तो ऐसा लगा कि तब तक तो समय निकल ही जाएगा। मेरे मुँह से स्वतः ही राम राम का जाप होने लगा। फिर जैसे ही मैं बैठी, तो मुझे लगा, गुरु जी आप प्रकाश पुंज के सामने खड़े होकर, अपने भक्तों की झोली में प्रभु की असीम कृपा बरसा रहे हैं। मेरी झोली में भी, जो कि स्वतः ही परम प्रभु की कृपा प्राप्ति के लिए फैल गई थी, परम प्रभु की कृपा से आपके द्वारा राम–नाम अंकित कुछ पुष्पों से भर गई। तुरन्त मेरे मन में विचार आया कि मेरी मूर्खता के कारण मुझे कम फूलों की प्राप्ति हुई। परम प्रभु की कृपा से कुछ और पुष्प मेरी झोली में आ गए। मेरी खुशी का ठिकाना न रहा। मैं राम–नाम के सिमरन से परम सुख का लाभ प्राप्त करती रही। मैंने देखा गुरु जी आप भाव विभोर होकर, प्रभु श्री राम के नाम की मस्ती में लीन होकर नाच रहे हैं, और अपने भक्तों पर प्रभु राम से कृपा करने की प्रार्थना भी कर रहे हैं।

प्रभु, अन्तिम साँस तक मेरा यह विश्वास बना रहे। ■

विभिन्न केन्द्रों पर सम्पन्न कार्यक्रम

जनवरी से मार्च 2016

साधना सत्संग, खुले सत्संग एवं नाम दीक्षा का विवरण

- **भिवानी**, हरियाणा, 6 दिसम्बर को विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन का आयोजन हुआ जिसमें 26 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **जालन्धर**, पंजाब में 13 दिसम्बर को विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन का आयोजन हुआ जिसमें 177 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **सूरत**, गुजरात में 19 व 20 दिसम्बर को खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 70 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **सुजानपुर**, पंजाब में 26 व 27 दिसम्बर को खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 200 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **होशंगाबाद**, मध्य प्रदेश में 25 दिसम्बर को एक दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ।
- **आंजना**, राजस्थान में 31 दिसम्बर को विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन का आयोजन हुआ जिसमें 5377 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **कुशलगढ़**, राजस्थान में 1 जनवरी 2016 को विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन का आयोजन हुआ जिसमें 4225 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **दाहोद**, गुजरात में 2 जनवरी 2016 को विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन का आयोजन हुआ जिसमें 1756 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **झाबुआ**, मध्य प्रदेश में 3 से 5 जनवरी 2016 तक खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 5978 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **इन्दौर**, मध्य प्रदेश में 8 से 10 जनवरी 2016 तक साधना सत्संग लगा जिसमें 431 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **फरीदाबाद**, हरियाणा 26 जनवरी को विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन का आयोजन हुआ जिसमें 107 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **पीलीबंगा**, राजस्थान में 30 व 31 जनवरी 2016 को खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 190 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **चित्रकूट**, मध्य प्रदेश में 1 फरवरी को विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन का आयोजन हुआ जिसमें 538 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **हांसी**, हरियाणा में 5 से 8 फरवरी तक साधना सत्संग लगा जिसमें 438 साधक सम्मिलित हुए और 119 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **भोपाल**, मध्य प्रदेश में 12 से 14 फरवरी को श्री रामशरणम् में श्री रामायण जी व गीता जी का अखण्ड पाठ, भजन कीर्तन व प्रवचन हुए, जिसमें 225 साधक सम्मिलित हुए। 190 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **बिलासपुर**, हिमाचल प्रदेश में 19 से 21 फरवरी 2016 खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 78 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **सिरसा**, हरियाणा में 27 व 28 फरवरी को खुले सत्संग का आयोजन हुआ। 26.2.16 को 101 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **दिल्ली** श्री रामशरणम् अक्तूबर से जनवरी तक 173 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

अन्य होने वाले विशेष कार्यक्रमों की सूचना

- **चम्बी**, हिमाचल प्रदेश में 15 मई को प्रातः 11 से अपराह्न 12:15 बजे तक विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन के पश्चात् अपराह्न 12:30 बजे नाम दीक्षा होगी।
- **भद्रवा**, जिला डोडा, जम्मू व कश्मीर (जो कि जम्मू से 225 कि.मी. आगे हैं) में 16 जून को अपराह्न 4 से 5-30 बजे तक विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन के पश्चात् नाम दीक्षा होगी।

निर्माणाधीन श्रीरामशरणम् की प्रगति

- **बीकानेर** राजस्थान में श्रीरामशरणम् का निर्माण कार्य तीव्रता से चल रहा है। हॉल का लैन्टर पड़ गया है। पी.ओ.पी. का काम आरम्भ हो गया है। आगामी 6 महीने में निर्माणाधीन कार्य पूर्ण हो जाने की आशा है।

साधना सत्संग (अप्रैल से सितम्बर 2016)		
हरिद्वार	18 से 23 अप्रैल	(सोम से शनिवार)
हरिद्वार(झाबुआ विशेष)	26 से 29 अप्रैल	(मंगल से शुक्रवार)
हरिद्वार	30 जून से 3 जुलाई	(बृहस्पति से रविवार)
हरिद्वार	14 से 19 जुलाई	(बृहस्पति से मंगलवार)

खुले सत्संग (अप्रैल से सितम्बर 2016)		
झाबुआ(मौन साधना)	7 से 15 अप्रैल	(गुरु से शुक्रवार)
मण्डी	10 अप्रैल	(रविवार)
लम्बासा फीजी	7 से 8 मई	(शनि व रविवार)
सुवा फीजी	14 से 15 मई	(शनि व रविवार)
मनाली	14 से 16 जून	(मंगल से गुरुवार)
सेलर्सबर्ग, अमेरिका	23 से 26 जून	(गुरु से रविवार)
दिल्ली	27 से 29 जुलाई	(बुध से शुक्रवार)
रोहतक	13 से 14 अगस्त	(शनि व रविवार)
रतनगढ़	27 से 28 अगस्त	(शनि व रविवार)
रिवाड़ी	3 से 4 सितम्बर	(शनि व रविवार)
भरेड़ी	11 सितम्बर	(रविवार)
गुरदासपुर	16 से 18 सितम्बर	(शुक्र से रविवार)
सिडनी	24 से 25 सितम्बर	(शनि व रविवार)

अन्य स्थानों पर नाम दीक्षा की तिथियाँ (अप्रैल से सितम्बर 2016)		
10 अप्रैल	रविवार	मंडी
17 अप्रैल	रविवार	शुक्रताल
7 व 8 मई	शनिवार व रविवार	लम्बासा,फीजी
14 व 15 मई	शनिवार व रविवार	सुवा, फीजी
15 मई	रविवार	चम्बी
16 जून	गुरुवार	मनाली
16 जून	गुरुवार	भद्रवा
19 जून	रविवार अपराह्न 2:30 बजे	मेरीलैंड, अमेरिका
23 जून	गुरुवार	सेलर्सबर्ग, अमेरिका
11 सितम्बर	रविवार	भरेड़ी
18 सितम्बर	रविवार	गुरदासपुर
25 सितम्बर	रविवार	सिडनी

श्रीरामशरणम् नई दिल्ली नाम दीक्षा की तिथियाँ (अप्रैल से सितम्बर 2016)	
24 अप्रैल	रविवार 10:30 बजे
22 मई	रविवार 10:30 बजे
19 जुलाई	मंगलवार सायं 4:00 बजे
21 अगस्त	रविवार 10:30 बजे
18 सितम्बर	रविवार 10:30 बजे

पूर्णिमा की तिथियाँ (अप्रैल से सितम्बर 2016)	
22 अप्रैल	शुक्रवार
21 मई	शनिवार
20 जून	सोमवार
19 जुलाई	मंगलवार
18 अगस्त	गुरुवार
16 सितम्बर	शुक्रवार

वर्ग पहेली

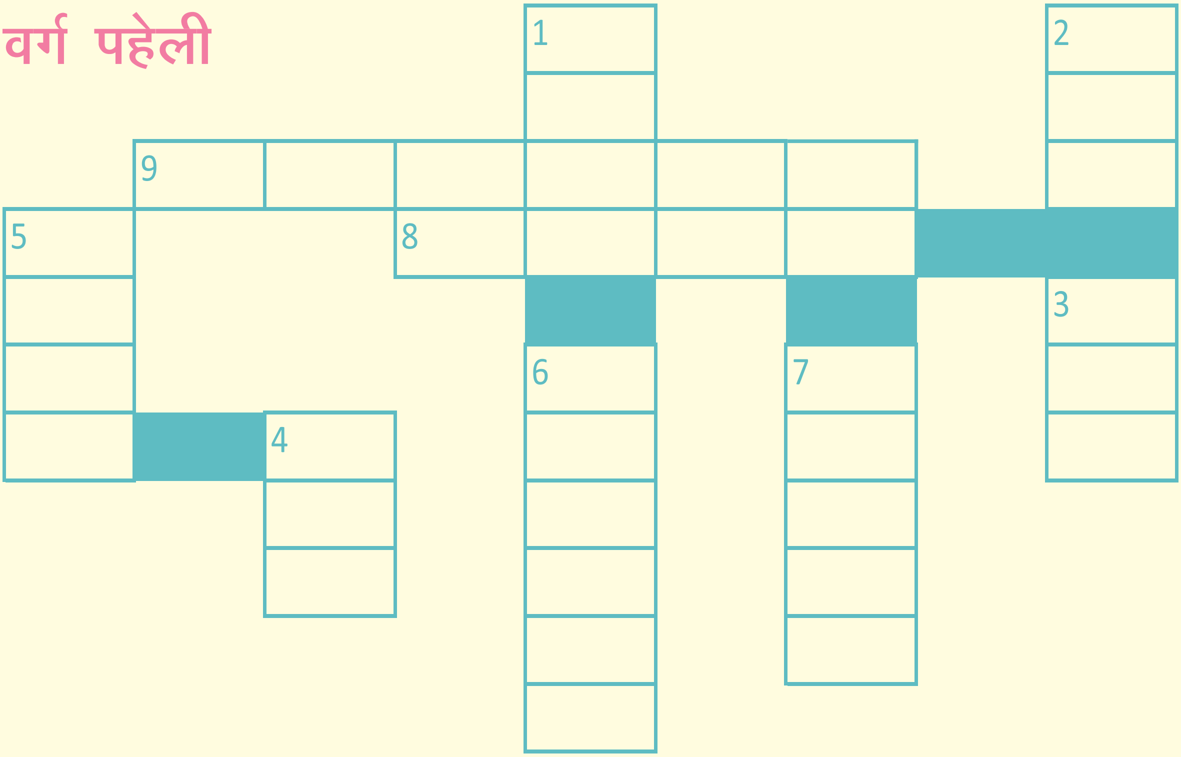

ऊपर से नीचे

1. परम पूजनीय विश्वामित्र जी महाराज जी का जन्म स्थान
2. परम पूजनीय श्री महाराज जी का दीक्षा स्थान
3. परम पूजनीय श्री महाराज जी का गुरु पद ग्रहण करने से पहले का निवास स्थान
4. परम पूजनीय श्री महाराज जी की जन्म तिथि
5. परम पूजनीय श्री महाराज जी की निर्वाण तिथि
6. परम पूजनीय श्री महाराज जी की गुरु पद ग्रहण करने की तिथि
7. परम पूजनीय श्री महाराज जी के बाल्यावस्था का निवास शहर

बाएँ से दाएँ

8. परम पूजनीय श्री महाराज जी का हरिद्वार में जल समाधि स्थान
9. परम पूजनीय श्री महाराज जी ने पूजनीय स्वामी जी महाराज की किस रचना की व्याख्या की

ऊपर से नीचे - 1 नारोवाल 2. हिसार 3. मनाली 4. 15 मार्च 5. 2 जुलाई 6. 9 दिसम्बर 7. सुजानपुर
बाएँ से दाएँ - 8. नीलधारा 9. श्री अमृतवाणी

यदि आप 'सत्य साहित्य' की इस प्रति को नहीं रखना चाहते,
तो कृपया इसे अपने स्थानीय केन्द्र या निकटतम श्रीरामशरणम् को लौटा दें।

प्रकाशक मुद्रक श्री अनिल दीवान द्वारा श्री स्वामी सत्यनन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, 8 ए रिंग रोड, लाजपत नगर–IV नई दिल्ली. 110024 से प्रकाशित
एवं रेव स्कैनस प्राइवेट लिमिटेड, ए–27, नारायणा औद्यौगिक ऐरिया, फेज़ 2, नई दिल्ली 110028 से मुद्रित, संपादकः मेधा मलिक कुदेसिया एवम् मालविका राय

©श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, नई दिल्ली
ईमेल: shreeramsharnam@hotmail.com
वेबसाईट: www.shreeramsharnam.org

आर. एन. आई. न०: 6642